तारा चक्र

जन्म तारा-: मनुष्य के जन्म समय चंद्रमा जिस नक्षत्र मे हो, उसे जन्म नक्षत्र कहते है। जन्म के समय दशा हमेशा स्वामी ग्रह की होती है। यदि माता व शिशु का जन्म एक ही नक्षत्र मे हो, तो उसे तारा दोष माना जाता है। जन्म नक्षत्र 1, 10, 19 वा नक्षत्र तरा कहलता है। इसे शारीरिक-सुख से देखा जाता है।

संपत-: मनुष्य के जन्म समय दूसरा नक्षत्र बहुत शुभ माना जाता है। पिता के नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र मे जन्मा पूत्र, पिता का सुख वैभव बढ़ाता है। जन्म नक्षत्र से 2, 11, 20 वा नक्षत्र, संपद कहलता है। इसका संबंध धन व कुटुम्ब सुख से है।

विपद तारा-: मनुष्य के जन्म समय तारा अशुभ व अनिष्टप्रद माना जाता है। इस नक्षत्र मे बैठे ग्रह, स्वामी अपनी दशा मे विघ्न ऑर कलेश डालता है। जन्म नक्षत्र से 3, 12, 20 वा नक्षत्र विपद्र कहलता है। यह दुख, संताप, असफलता व अपयश दिया करता है।

क्षेम तारा-: मनुष्य के जन्म समय चोथा तारा, शुभ व कल्याणकारी होता है। इसमे बैठे ग्रह का मनुष्य स्नेह, सहयोग, सम्मन व धन वैभव पता है। इस नक्षत्र मे जन्मा मनुष्य स्नेह व सम्मान देने वाला और हसमुख होता है। इस नक्षत्र का मनुष्य अपने आप को कभी उपेक्षा या अवहेलना पाने पर, वह अपने आप को अकेला पता है। जन्म नक्षत्र से 4, 13, 22 नक्षत्र क्षेम, शुभ व कल्याणकारी होता है।

प्रत्यरि-: जन्म नक्षत्र से पाँचवा नक्षत्र शत्रु नक्षत्र कहलता है। एसमे जन्मा मनुष्य पिता का अवज्ञा व उपेक्षा करता है। वह अपने पिता से शत्रु सरीखा व्यवहार करने मे ब संकोच नही करता। जन्म नक्षत्र से 5, 14, 23 वे नक्षत्र मे बैठे ग्रह, शत्रु, बाधा व कलेश दिया करते है।

साधक-: जन्म नक्षत्र से 6, 15, 24 नक्षत्र साधक कहलाता है। एस नक्षत्र मे जन्मा मनुष्य, पिता का आज्ञाकारी व कार्यसाधक होता है। साधक नक्षत्र मे जन्मा मनुष्य, निष्ठावान मित्र, सेवक या सहयोगी बनकर सफलता पाने मे सहायक होता है। कार्य सिद्धि, लक्ष्य प्राप्ति व सफलता पाने मे सहायक होने से जन्म नक्षत्र से छठा नक्षत्र साधक कहलाता है। 6, 15, 24 वे नक्षत्र मे ग्रह सिद्धि व सफलता देते है।

वध-: जन्म नक्षत्र मे 7वा नक्षत्र वधतारा कहलता है। जैसे नाम से स्पष्ट है की इस नक्षत्र मे बैठे ग्रह की दशा मे, मृत्यु या मृत्यु तुल्य कष्ट पाने की संभावना बढ़ जाती है। इस नक्षत्र मे जन्मा मनुष्य चोर व मादक द्रव्यों का सेवन करने वाला व पिता को अपयश देने वाला होता है। जन्म नक्षत्र से 7, 17, 25 वा नक्षत्र वध तारा कहलाता है।

मित्र-: जन्म नक्षत्र से 8वा नक्षत्र मित्र तारा कहलता है। इस नक्षत्र मे जन्मा मनुष्य आज्ञाकारी तथा पिता की चिंता को दूर करने वाला होता है तथा सच्चा मित्र होता है। इस नक्षत्र का मनुष्य आज्ञाकारी, तथा अपने पिता की चिंता को दूर करने वाला होता है। इसमे बैठे ग्रह या नक्षत्र स्वामी मित्रव्रत व्यवहार कर जातक को सुखी बनाते हे।

अतिमित्र-: जन्म नक्षत्र से 9वा तारा अतिमित्र होने से बहुत शुभ व कल्याणकारी माना जाता है। इस नक्षत्र मे जन्मा मनुष्य, पिता को धन, मान व यश दिलाता है। अपने कुल का मान समान बढाता है। जन्म नक्षत्र से 9, 18, 27वा नक्षत्र तारा अतिमित्र कहलाता है। आतिमित्र नक्षत्र मे बैठे ग्रह की दशा धन, मान व सुख दिया करती है।

1 जन्म	1, 10, 19
2 संपत	2, 11, 20
3 विपत	3, 12, 21
4 क्षेम	4, 13, 22
5 प्रत्यरि	5, 14, 23
6 साधक	6, 15, 24
7 वध	7, 16, 25
8 मित्र	8, 17, 26
9 अतिमित्र	9, 18, 27